आर्डर-फार्म

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि

हिन्दी प्रकाशन

❑ **निर्मल धारा धर्म की** *२०००, पृष्ठ १४८, रु. ३०/-*
धर्म न हिंदू है न बौद्ध, न मुस्लिम है न जैन, न सिक्ख है न ईसाई। धर्म सार्वजनीन है। धर्म कुदरत का कानून है। धर्म का यही सार्वजनीन स्वरूप आचार्य गोयन्काजी ने सार्वजनिक प्रवचनों में समझाया है। इन्हीं प्रवचनों का संक्षिप्त संकलन इस पुस्तक में संगृहीत है।

❑ **प्रवचन सारांश** *१९९२, पृष्ठ १००, रु. ३०/-*
दस-दिवसीय शिविरों में पू. गुरुजी द्वारा दिये गये प्रवचनों का सारांश संकलन है।

❑ **जागे पावन प्रेरणा** *१९९४, पृष्ठ २०३, रु. ५२/-*
इस पुस्तक में पू. गुरुजी ने सरल तथा सुस्पष्ट ढंग से बुद्ध का जीवन और उनके उपदेशों का वर्णन किया है।

❑ **जागे अन्तर्बोध** *२००१, पृष्ठ १८०, रु. ४५/-*
यह जागे पावन प्रेरणा की ही आगे की कड़ी है जिसमें बुद्ध के उपदेशों का गहराई से वर्णन किया गया है।

❑ **धर्मः आदर्श जीवन का आधार** *२००१, पृष्ठ ८८, रु. ३०/-*
इस पुस्तक में सरल तरीके से धर्म की व्याख्या की गयी है।

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध भाग १ एवं २ (सजिल्द)** *१९९५, पृष्ठ २५४ रु. १६५/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध भाग १ और २ (अजिल्द)** *२००१, पृष्ठ २५४, रु. १३०/-*

❑ **धारण करे तो धर्म** *१९९९, पृष्ठ १७६, रु. ४०/-*
बुद्ध के जीवन से संबंधित तथा धर्म की व्याख्या करनेवाली प्रेरणादायक कहानियां।

❑ **क्या बुद्ध दुःखवादी थे?** *२०००, पृष्ठ ७८, रु. २२/-*
बुद्ध दुःखवादी नहीं थे। उदाहरण के साथ विस्तार से इसे यहां समझाया गया है।

❑ **मंगल जगे गृही जीवन में** *२००१, पृष्ठ ९८, रु. २५/-*
बुद्ध की वाणी पर आधारित इस पुस्तक में यह समझाया है कि गृहस्थ गृही जीवन में कैसे सामंजस्य स्थापित कर सकता है।

❑ **धम्मवाणी संग्रह** *२०००, पृष्ठ ६८, रु. २०/-*
विपश्यना (हिन्दी) पत्रिका से विषयवार मूल्यवान संग्रह। इस में पालि गाथाओं के साथ-साथ उनके हिन्दी अनुवाद भी हैं।

❑ **विपश्यना पगोडा स्मारिका** *२०००, पृष्ठ १७५, रु. १००/-*
मुंबई के गोराईगांव में बन रहे **विश्व विपश्यना पगोडा** की नींव रखे जाने के शुभ अवसर पर लिखे गये लेखों व पत्रों का संग्रह। सम्पूर्ण विश्व में धर्म के प्रसार के बारे में यहां विस्तृत प्रतिवेदन हैं। साथ ही जीवन के अनेक क्षेत्रों से आये साधकों के बड़े ही प्रेरणादायी व्यक्तिगत वृतान्त भी यहां संकलित हैं।

❑ **सुत्तसार - १** *२००१, पृष्ठ २२०, रु. ५५/-*
इसमें दीघनिकाय और मज्झिमनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **सुत्तसार - २** *२००१, पृष्ठ १८६, रु. ५०/-*
इसमें संयुत्तनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **सुत्तसार - ३** *२००१, पृष्ठ १५०, रु. ४५/-*
इसमें अंगुत्तरनिकाय और खुद्दकनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **धम्म-वंदना (पालि-हिन्दी)** *२००१, पृष्ठ ९९, रु. २०/-*
यह तिपिटक की गाथाओं का हिन्दी अनुवाद के साथ संग्रह है।

❑ **धम्मपद (पालि-हिन्दी)** *२००१, पृष्ठ ९३, रु. २५/-*
धम्मपद की गाथाओं का हिन्दी अनुवाद।

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा के साथ अनुवाद)** *१९९६, पृष्ठ ५४, रु. ३०/-*
महासतिपट्ठानसुत्त में भगवान बुद्ध ने साधना के बारे में विस्तार से बताया है। यह पुस्तक इस सुत्त का अनुवाद है। साथ ही इसमें पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या भी दी गयी है। साधना करनेवाले या बुद्ध के उपदेशों को जानने की इच्छा करनेवाले गंभीर साधकों के लिए यह बड़े लाभ की पुस्तक है।

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद)** १९९६, पृष्ठ ४९, रु. २०/-
महासतिपट्ठानसुत्त का अनुवाद तथा पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या।

❑ **मंगल हुआ प्रभात** १९९८, पृष्ठ १९१, रु. ४५/-
पू. गुरुजी द्वारा प्रणीत दोहों का एक अमूल्य संग्रह। साधकों तथा अन्यों द्वारा प्रशंसित।

❑ **धन्यबाबा (आत्मकथन)** २००२, पृष्ठ ११२, रु. ३५/-
पूज्य गुरुजी के बचपन में अपने बाबा का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हीं बाबा के प्रति कृतज्ञता में लिखे उनके दोहे और उनके जीवन के रोमांचकारी संस्मरणों को इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है।

❑ **कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयन्का - व्यक्तित्व और कृतित्व, लेखक - श्री बाल कृष्ण गोयन्का** २००२, पृष्ठ ११९, रु. ३५/-
पू. गुरुजी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का तथा उनके द्वारा विश्व के कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों का विस्तार से वर्णन है।

❑ **पातंजल योगसूत्र, लेखक - सत्येन्द्रनाथ टंडन** २००३, पृष्ठ ९६, रु. ४५/-
योगसूत्र के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि बुद्ध के कुछ शताब्दी बाद हुए। बुद्ध के उपदेशों से बड़ी मात्रा में सार ग्रहण कर इन्होंने योगसूत्र का प्रणयन किया।बुद्ध की साधना विधि और योग में साम्य तथा वैषम्य का गंभीर शोधपरक अध्ययन। यहां योगसूत्र के संदर्भों की तुलना पालि तिपिटक संदर्भों से की गयी है।

❑ **आहुनेय्य, पाहुनेय्य, अंजलिकरणीय डॉ. ओम प्रकाश जी** २००३, पृष्ठ ५६, रु. ३०/-
इस पुस्तक में डॉक्टर साहब के मौखिक कथनों तथा उनसे प्राप्त हुए पत्रों में अंकित पंक्तियों का विवरण है। ये वही चिकित्सक थे जो विपश्यना का शिविर करने से पहले पूज्य गुरुजी को 'माइग्रेन' का आक्रमण होने पर अफीम की सुई लगाया करते थे।

❑ **लोक गुरु बुद्ध** २००३, पृष्ठ १०, रु. ४/-
इस पुस्तिका में पूज्य गुरुजी ने समझाया है कि भगवान बुद्ध की शिक्षा केवल भिक्षुओं के लिए ही नहीं, बल्कि गृहस्थों के लिए भी उतनी ही लाभदायक है, इसीलिए वे लोक गुरु हुए। उन्होंने समाज की बुराइयों और कुरीतियों को दूर कर वैज्ञानिक रूप से मान्य सद्धर्म की स्थापना की थी।

❑ **आत्म-कथन** २००३, पृष्ठ ९८, रु. ३५/-
यह पूज्य गुरुजी की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा का सजीव वर्णन किया है। इसमें उनका कवि हृदय और स्वदेश प्रेम भी झलकता है।

❑ **राजधर्म** २००३, पृष्ठ ६८, रु. २६/-
यह तिपिटक और इतिहास पर आधारित एक ऐसी शोधपरक पुस्तक है जो न केवल राजधर्म के गुणों को अपना कर आचरण सुधारने की प्रेरणा देती है, बल्कि भगवान बुद्ध और सम्राट अशोक के बारे में फैली गलत धारणाओं को दूर कर उनका स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत करती है।

❑ **शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ?** २००३, पृष्ठ १८, रु. ५/-
इसमें इस बात का विस्तृत विवरण है कि भगवान बुद्ध की शिक्षा की अवमानना तथा जाति-भेद की कट्टरता न केवल शाक्यों तथा कोलियों के विनाश का कारण बनी बल्कि वे किसी के भी विनाश का कारण बन सकती हैं।

❑ **गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो?** २००३, पृष्ठ १०, रु. ४/-
इसमें भगवान बुद्ध द्वारा सात अपरिहाणीय धर्मों का विस्तृत विवरण है, जिनके अनुपालन से किसी भी गणराज्य की सुरक्षा संभव हो सकती है। (उदाहरण सहित)

❑ **बाह्य सुरक्षा (देश की बाह्य सुरक्षा)** २००३, पृष्ठ ६, रु. ३/-
किसी भी देश की सुरक्षा के लिए जो अनिवार्य आवश्यकताएं होनी चाहिएं, उनका विवरण भगवान बुद्ध की जबानी!

❑ **अंगुत्तर निकाय (हिन्दी अनुवाद) भाग-१** २००४, पृष्ठ ३०६, रु. १००/-
इस पुस्तक में एककनिपात से लेकर एकादशकनिपात में एक से लेकर उत्तरोत्तर बढ़ते क्रम से ग्यारह धर्मों के संबंध में भगवान बुद्ध के उपदेश संगृहीत हैं। वह काम दीघ निकाय के 'दसुत्तर' और 'संगीतिपरियाय' सुत्तों में तो किया ही गया है, अंगुत्तर निकाय में और भी विस्तार से किया गया है। इसके निपातों में एकक से लेकर एकादशकनिपात में अंकोत्तर वृद्धि होती चली गयी है और एक से, दो से, तीन से... इस तरह क्रमशः ग्यारह धर्मों के संबंध में बुद्ध के उपदेश पाये जाते हैं –इसलिए इसे अंगुत्तर निकाय कहते हैं जो सार्थक है।

❑ **केंद्रीय कारागृह जयपुर, विपश्यना का प्रथम जेल शिविर** २००५, पृष्ठ ६४, रु. ३०/-
इसमें 'जेलों में विपश्यना' का एक ऐतिहासिक पर्यवेक्षण, जेल-शिविर के बारे में किये गये शोधकार्य,शिविर में भाग लेनेवाले बंदियों में से हत्या के आरोप में बंद २४ बंदियों के अनुभव, बुद्धवाणी के संदर्भ में शिविरार्थियों के अनुभवों की समीक्षा मृत्युदंड प्राप्त कैदी विपश्यना के प्रभाव से प्रसन्न मुद्रा से फांसी के तख्ते पर चढ़ा, बुद्ध द्वारा अनुदेशित अड़तीस मंगल-धर्म, शिविर काल के चित्र इ. प्रस्तुत है।

❑ **विपश्यना : लोक मत भाग-१** २००५, पृष्ठ १२०, रु. ४०/-
इसमें विपश्यना के बारे में 'लोक मत' जानने के लिए विपश्यना शिविर में भाग लेने वाले साधकों-साधिकाओं के लेख एवं दस-दिवसीय शिविर के दसवें दिन निजी अनुभवों की जानकारी प्रस्तुत है। जिन साधकों-साधिकाओं के उद्गार प्रकाशित हुए हैं वे संसार के भिन्न-भिन्न देशों से, तथाकथित विविध प्रकार के धर्मों से तथा अलग-अलग तबकों से हैं।

❑ **विपश्यना : लोक मत भाग-२** २००५, पृष्ठ १६४, रु. ४५/-
इसमें विपश्यना के बारे में 'लोक मत' जानने के लिए दीर्घ शिविर किये साधकों के अनुभव प्रस्तुत हैं।

❑ **अग्रपाल राजवैद्य जीवक** २००५, पृष्ठ २४, रु. १५/-

इस पुस्तक में बुद्धकालीन आयुर्वेद चिकित्सक जीवक का, जो श्रोतापन्न थे उनका जीवन वृत्तांत दिया हुआ है। जीवक भगवान बुद्ध और उनके भिक्षुसंघ की चिकित्सा-सेवा करते थे। भगवान बुद्ध ने जीवक को उपासकों में सदा प्रसन्न रहने वाले गुण में अग्र होने की उपाधि दी।

❑ **पथ-प्रदर्शिका** पृष्ठ ६, रु. १.००

यह पुस्तक विपश्यना साधना के नियमित अभ्यास हेतु पुराने साधकों के लिए मार्गदर्शिका है।

❑ **विपश्यना क्यों?** पृष्ठ ४, रु. १.००

विपश्यना साधना के नियमित अभ्यास से हम किस तरह शांतिपूर्वक जीवन जी सकते हैं, यह इस पुस्तिका में बताया है।

❑ **सम्राट अशोक के अभिलेख** २००६, पृष्ठ १५२, रु. ५०.००

भारत तथा उससे बाहर के देशों में सम्राट अशोक के अभी तक ४२ अभिलेख खोजे जा चुके हैं। इस अभिलेखों में सम्राट के जो अनुदेश अंकित हैं उनकी जानकारी हर किसी को होना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से इस पुस्तक को प्रकाशन में लाया गया है।

❑ **अहिंसा किसे कहें?** २००६, पृष्ठ ३०, रु. १०.००

इस पुस्तक में विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी का सार्वजनिक प्रवचन है जो उन्होंने १३ सितम्बर १९९९ को अहिंसा हॉल, खार, मुंबई में दिया था। इसमें उन्होंने धर्म क्या है और उसे कैसे धारण किया जाता है यह बताया है।

❑ **प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का संक्षिप्त जीवन-परिचय** २००६, पृष्ठ २०, रु. १५.००

इस पुस्तक में प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का संक्षिप्त जीवन-परिचय है।

❑ **गौतम बुद्धः जीवन-परिचय और शिक्षा** २००६, पृष्ठ ३६, रु. /-

इस पुस्तक में बुद्ध का संक्षिप्त जीवन-परिचय तथा छः ऐतिहासिक संगितियों का वर्णन है।

❑ **लकुण्डक भद्दिय** २००६, पृष्ठ ८, रु. /-

इस पुस्तक में 'लकुण्डक भद्दिय' का संक्षिप्त जीवनवृत्तांत है।

❑ **१२ हिंदी पुस्तिकाओं का सेट** रु. १२.००

राजस्थानी प्रकाशन

❑ **जागो लोगा जगत रा** १९९७, पृष्ठ २४६, रु. ४५/-

पू. गुरुजी द्वारा लिखित राजस्थानी दोहों का संग्रह। ये दोहे धर्म की गहराई को सरल भाषा में प्रकाशित करते हैं।

❑ **परिभाषा धरम री** २००६, पृष्ठ ३४, रु. १०.००

इस पुस्तक में पू. गुरुजी द्वारा दि. १३ जून, १९९२ को कलकत्ता में चूरू नागरिक परिषद् की ओर से आयोजित सभा में अपनी मातृभाषा राजस्थानी में दिया गया सार्वजनिक धर्म-प्रवचन है। पू. गुरुजी ने इसमें धर्म का जीवन कैसे जीयें यह बताया है।

❑ **५ राजस्थानी पुस्तिकाओं का सेट** रु. ५.००

ENGLISH PUBLICATIONS

❑ **Sayagyi U Ba Khin Journal** *1998, 287 pages. Rs160/-*

This journal commemorates Sayagyi's exemplary life and teachings. It contains his discourses, biographical sketches of his life and the lives of the teachers who preceded him as well as articles on various aspects of Vipassana.

❑ **Essence of Tipitaka by U Ko Lay** *1998, 225 pages. Rs 100/-*

A concise guide to the voluminous teachings of the Buddha contained in the Pali Canon. It gives an overview of the entire Tipitaka as well as a taste of the Buddha's teaching by focussing on a few of the most important discourses. U Ko Lay was formerly the Vice Chancellor of Mandalay University.

❑ **The Art of Living by William Hart** *2001, 168 pages. Rs 80/-*

A full-length study of the teaching of Vipassana useful both for meditators and non-meditators alike. Includes illustrative stories as well as answers to student's questions that convey a vivid sense of the teaching.

❑ **The Discourse Summaries** *2001, 123 pages. Rs 40/-*

Summaries of the evening discourses by S.N. Goenka given during a ten-day course of Vipassana.

- **Healing the Healer & The Experience of Impermanence by Dr Paul Fleischman**

2001, 30 pages. Rs 25/-

It describes the benefit of Vipassana to those who are serving in the medical profession.

- **Come People of the World**

1999, 32 pages. Rs 25/-

Translations of selected Hindi couplets from Goenkaji's chantings.

- **Gotama the Buddha: His Life and His Teaching**

2000, 31 pages. Rs 25/-

A brief sketch of the life and teaching of the Buddha and a description of the six historical Councils.

- **The Gracious Flow of Dharma**

1997, 70 pages. Rs 35/-

Condensed from three-day public talks of S.N. Goenka explaining the true meaning of Dhamma (Dharma in Sanskrit), which has now been mistakenly used to refer to 'sect' or 'sectarianism'. Goenkaji explains in detail how to live a good Dhammic life - a life full of peace and harmony through the practice of Vipassana.

- **Discourses on Satipatthana Sutta**

2001, 136 pages. Rs 60/-

Evening discourses by S.N. Goenka during the 8-day course of meditation during which he expounds the Mahasatipatthana Sutta.

- **The Wheel of Dhamma Rotates Around the World**

1999, 38 pages. Rs 65/-

A concise informative compilation on the Vipassana Centres in India and around the world with pictures.

- **Dharma: Its True Nature**

1998, 80 pages. Rs 70/-

A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. at Dhammagiri, Igatpuri in May 1995. It is an attempt to address the idea that the world society is at historical crossroads with the overwhelming advancement of technology on one side and the erosion of human values on the other.

- **Vipassana: Its Relevance to the Present World**

1995, 141 pages. Rs 95/-

A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. in New Delhi in April 1994. The papers focus on Vipassana's impact in the fields of education, prison reforms, improved management in business and Government as well as the Pali Tipitaka research and publication project of V.R.I.

- **Vipassana Addictions & Health (Seminar 1989)**

1998, 78 pages. Rs 70/-

A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. at Dhamma Giri, Igatpuri in 1989. It focuses on the beneficial effects of Vipassana on drug addicts and general health.

- **The Importance of Vedana and Sampajanna (Seminar 1990)**

2002, 132 pages. Rs 110/-

This covers the important topic of the Buddha's teaching "Vedana and Sampajanna" in great detail.

- **Pagoda Seminar 1997**

1997, 127 pages. Rs 80/-

The papers presented at the time of the foundation-stone laying ceremony of the Grand Vipassana Stupa being built near Mumbai. It contains detailed reports of the spread of Dhamma around the world. Also included are a number of moving personal accounts of individual meditators from different walks of life.

- **Psychological Effects of Vipassana on Tihar Jail Inmates**

1998, 47 pages. Rs 60/-

Vipassana has been adopted as a prison reform technique in the largest jail in India, the Tihar Jail. The book gives detailed report of the scientific studies carried out to assess the impact of Vipassana meditation on the prisoner's mental health.

- **Effect of Vipassana Meditation on Quality of life, Subjective Well-Being and Criminal Propensity among Inmates of Tihar Jail, Delhi**

2002, 48 pages. Rs 60/-

Research analysis and relevant statistics are covered in this study by Dr. Amulya Khurana and Prof. P. L. Dhar

- **Impact of Vipassana in Government**

2004, 166 pages. Rs 125/-

The book gives detailed report of the scientific studies carried out to assess the impact of Vipassana meditation in Government. Research analysis and relevant statistics are covered in this study by Mr. D. R. Parihar, I. F. S. Maharashtra Cadre.

- **A Re-appraisal of Patanjali's Yoga Sutras, by S. N. Tandon**

1995, 142 pages. Rs 80/-

Patanjali, the author of Yoga Sutras wrote his scholarly works a few centuries after the Buddha, and has drawn heavily from the teachings of the Buddha. An in-depth study of the similarities and dissimilaritiesof the two. The book contains the Yoga Sutra text references.

- **Manuals of Dhamma**

2001, 272 pages. Rs.160/-

Originally published by Union Buddha Sasana Council of Myanamr as "Manuals of Buddhism", this book contains the English translations of Venerable Ledi Sayadaw's authoritative essays on the essence of Buddha's teachings

- **Was the Buddha a Pessimist?**

2001, 69 pages. Rs 35/-

The Buddha was not a pessimist. This is explained in detail with examples.

- **Mahasatipatthana Sutta**

1998, 94 pages. Rs 50/-

An annotated translation of 'Mahasatipatthana Sutta', the primary discourse in which the Buddha described the practice of meditation in detail. It is of interest to any serious student of meditation or to one who wants to know about Buddha's teaching on the meditation practice.

- **Pali Primer by Lily De Silva**

1994, 152 pages. Rs 70/-

A guide to learn the Pali language.

- **Key to Pali Primer by Lily De Silva**

1999, 67 pages. Rs 35/-

Gives answers to the test questions in 'Pali Primer". An aid in learning

- **Manual of Vipassana Meditation by U Ko Lay**

2002, 119 pages. Rs 65/-

This book throws light on the scientific aspect of the Buddha's Teaching. His teaching is explained with the help of the three important suttas— Dhammacakkappavattana, Anattalakkhana and Mahasatipatthana.

- **For the Benefit of Many**

2002, 201 pages. Rs 120/-

This book contains a valuable compilation of Goenkaji's talks and question-answer sessions.

- **Realising Change**

2003, 235 pages. Rs 100/-

This book featuring accounts by Vipassana practitioners leading everyday lives, aims to make Vipassana both better known and more clearly understood.

- **The Clock of Vipassana has Struck**

2003, 244 pages. Rs 100/-

This volume celebrates Sayagyi U Ba Khin's exemplary life. It contains a collection of his writings and discourses, a biological sketch of his life and the lives of the teachers who preceded him, and is woven together with an extensive interview with his reknowned disciple, S.N.Goenka.

❑ **Meditation Now - Inner Peace through Inner Wisdom** *2003, 123 pages. Rs 65/-*

A collection of articles by Goenkaji commemorating his tour of North America in 2002 including The Universal Message of Peace (Millennium World Peace Summit, New York), The Meaning of Happiness (World Economic Forum, Davos, Switzerland) etc.

❑ **Defence Against External Invasion**

2003, Pages 6, Rs. 4/-

This book throws light on the inevitable requsites advised by the Buddha for the protection of any country.

❑ **How to Defend the Republic**

2003, Pages 10, Rs. 4/-

This book gives detail explaination of seven obligatory rules, by complying those any Republic can be protected.

❑ **Inner Peace For World Peace**

2003, 21 Pages, Rs. 30/-

Talks given by Goenkaji at United Nations on
a) The Universal Dhamma. b) The subject which put the teaching of the historical Buddha in a modern perspective.

❑ **Why Was the Sakyan Republic Destroyed?**

2004, 18 pages, Rs. 8/-

Disobeying rules of Dhamma and fanaticism of caste disaffection destroyed the Sakyan Republic and can destroy any Republic.

❑ **The Caravan of Dhamma**

2004, 166 pages, Rs. 80/-

Diary of S. N. Goenka's "Meditation Now" Tour of Europe and North America, April 10 to August 15, 2002. This diary gives sprinkling details of this remarkable tour and merely gives glimpses of Goenkaji's daily life on the tour.

❑ **Vipassana in Government** *Rs. 1.00*

❑ **Peace within oneself, for Peace in the World (International Buddha Seminar, Sarnath,1998)**

Rs. 10.00

❑ **Guidelines for the Practice of Vipassana Meditation** *Rs. 1.00*

❑ **Set of 9 English Pamphlets** *Rs. 9.00*

TAMIL

❑ **The Art of Living by William Hart**

2001, 180 pages. Rs 60/-

A Tamil translation of full-length study of the teaching of Vipassana useful both for meditators and non-meditators alike. Includes illustrative stories as well as answers to student's questions that convey a vivid sense of the teaching.

❑ **The Discourse Summaries** *2005, 102 pages Rs. 30/-*

❑ **The Gracious Flow of Dhamma** *2005, 102 pages Rs. 25/-*

(तमिल, तेलगू, कन्नड आदि भाषाओं में भी कई पुस्तकें छपी हैं जो कि स्थानीय केंद्रों पर उपलब्ध हैं।

मराठी प्रकाशन

❑ **जगण्याची कला** *१९९७, पृष्ठ २२८, रु. ४५/-*

हे पुस्तक विल्यम हार्ट यांच्या "आर्ट ऑफ लिव्हींग" या पुस्तकाचे भाषांतर आहे. यात साधक व इतर सर्वांच्या उपयोगात येईल अशा विपश्यना साधनेबद्दल संपूर्ण माहीती दिलेली आहे. या शिकवणीचा मर्म जाणून घेण्यासाठी या पुस्तकात विपश्यनेची माहीती गोष्टींच्या स्वरूपात तसेच साधकांच्या प्रश्नांना उत्तरे देऊन स्पष्ट केलेली आहे.

❑ **जागे पावन प्रेरणा** १९९४, पृष्ठ २५१, रु. ४०/-

हे पुस्तक ,याच नावाच्या हिन्दी पुस्तक ाचे भाषांतर आहे. यामध्ये गोयन्क ाजींचे क ाही लेख दिलेले आहेत ज्यात सोप्या व सुबोध भाषेत बुद्धांचे जीवन व त्यांच्या शिक वणुकीवर प्रक ाशझोत टाक लेला आहे.

❑ **प्रवचन सारांश** १९९४, पृष्ठ ८४, रु. २२/-

या पुस्तक ात दहा-दिवसीय शिबीरातील गोयन्क ाजींच्या प्रवचनांचा सारांश दिलेला आहे.

❑ **धर्मः आदर्श जीवनाचा आधार** १९९६, पृष्ठ १०८, रु. २५/-

हे पुस्तक ,याच नावाच्या हिन्दी पुस्तक ाचे भाषांतर आहे. यात धर्म क ाय आहे, हे सोप्या व समजण्यासारख्या पद्धतीने सांगितलेले आहे.

❑ **जागे अंतर्बोध** २००१, पृष्ठ १८७, रु. ३५/-

हे पुस्तक ,याच नावाच्या हिन्दी पुस्तक ाचे भाषांतर आहे. हा जागे पावन प्रेरणा पुस्तक ात दिलेल्या माहितीचा पुढचा भाग आहे आणि यात बुद्धांच्या शिक वणुकीवर खोलवर प्रक ाशझोत टाक लेला आहे.

❑ **निर्मळ धारा धर्माची** २००४, पृष्ठ ११८, रु. २८/-

हे पुस्तक ,याच नावाच्या हिन्दी पुस्तक ाचे भाषांतर आहे. विपश्यना विद्या सार्वदेशिक ,सार्वजनीक आणि सार्वक ालिक आहे –देश, जात आणि समाज यांच्या मर्यादेपासून अगदी मुक्त यात संपूर्ण मानव जातीचे क ल्याण सामावलेले आहे, हे या पुस्तक ात आचार्य गोयंक जींनी समजवून सांगितले आहे.

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा)** २००६, पृष्ठ ७६, रु. ३०/-

महासतिपट्ठानसुत्रात भगवान बुद्धांनी साधनेच्या बाबतीत विस्तारपूर्वक सांगितले आहे. तसेच यामधे पारिभाषिक शब्दांची व्याख्या दिलेली आहे. साधना क रणाऱ्या आणि बुद्धांचे उपदेश जाणण्याची इच्छा असणाऱ्या गंभीर साधक ांसाठी हे खूप लाभदायी पुस्तक आहे.

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद)** २००६, पृष्ठ ६०, रु. २५/-

महासतिपट्ठानसुत्राचा अनुवाद आणि पारिभाषिक शब्दांची व्याख्या यात आहे.

❑ **मंगलमय गृहस्थ जीवन** २००६, पृष्ठ १००, रु. २५/-

बुद्धवाणी वर आधारित या पुस्तक ात हे समजवुन सांगितले आहे कि गृहस्थ गृही जीवनात क शाप्रक ारे सामंजस्य स्थापित क रू शक तो.

गुजराती प्रक ाशन

❑ **धर्मः आदर्श जीवननो आधार** २०००, पृष्ठ १३०, रु. २२/-

❑ **प्रवचन सारांश** १९९५, पृष्ठ ८८, रु. ३०/-

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद सहित)** २००१, पृष्ठ ५२, रु. २०/-

❑ **धारण क रे तो धर्म** २००१, पृष्ठ १७६, रु. ४५/-

❑ **जागे अंतर्बोध** २००१, पृष्ठ १८८, रु. ४५/-

❑ **जागे पावन प्रेरणा** २००४, पृष्ठ २१८, रु. ५२/-

❑ **क्या बुद्ध दुःखवादी थे?** २००४, पृष्ठ ६७, रु. २२/-

❑ **निर्मल धारा धर्म की** २००४, पृष्ठ १५२, रु. ३५/-

❑ **विपश्यना शा माटे? (पुस्तिक ा)** पृष्ठ ६, रु. १/-

❑ **मंगल जगे गृही जीवन में** २००५, पृष्ठ १०४, रु. २५/

आप जो कि ताबे खरीदना चाहते हैं उनके सामने दिये हुए बॉक्स में (✓) यह निशान लगाये और यह फार्म या इसकी फोटो कॉपी भेज दीजीए। कृ पया शुल्क **डी.डी. (डिमांड ड्राफ्ट)** से 'विपश्यना विशोधन विन्यास' धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, जिला - नाशिक के नाम-पते पर ही भेजें। पुस्तकों के लिए अग्रिम राशी भेजना आवश्यक हैं। साथ में कृ पया निम्न प्रक ार से डाक खर्च जोड़क र भेजें: / /Tick (3) in the box for the books you want to purchase and send us this form or its xerox. Please send the payment in advance by **DEMAND DRAFT** in the name of Vipassana Research Institute, Dhamma Giri Igatpuri-422403. For Postage, please add additional amount as per the chart below:–

Total cost of the books order/ पुस्तकों की कुल राशी	≤ Rs 200/- रु. २००/- तक	Rs. 201-500 रु. २०१ से ५००	Rs. 501-5000 रु. ५०१ से ५०००	> Rs. 5000/- रु. ५०००/- से अधिक
Postage for registered printed books in India and Nepal / भारत व नेपाल के लिए डाक खर्च	Rs. 35/- रु. ३५/-	20% २०%	10% १०%	5% ५%

VIPASSANA WEBSITES

Dhamma Giri: www.vri.dhamma.org

Contains information about Indian Vipassana centres and Schedule of Courses, VRI Newsletters, publications, research papers, etc.

Vipassana introduction: www.dhamma.org

Contains information about Course Schedules of Vipassana centres worldwide, Code of Discipline, Application Form for 10-day courses, etc.

Vipassana (old students only): <www.dhamma.org/os>

Contains information for old students of Vipassana including International Vipassana Newsletters and reference material. (username: oldstudent; password: behappy)

Vipassana Newsletters on the VRI website

Current and past issues of the Hindi Vipassana Patrika and English Newsletter can be downloaded from the VRI website:

http://www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

Http://www.vri.dhamma.org/newsletters/index.html

Pali Tipiṭaka Website: www.tipitaka.org

Contains the Chaṭṭha Saṅgāyana Tipiṭaka in Roman script alongwith commentaries, subcommentaries and related Pali texts.7 istMbr, 2006